MACRO ECONOMICS

अर्थशास्त्र

कक्षा–12

अभ्यास के प्रश्न

L - 3

राष्ट्रीय आय का लेखांकन

Presented by
Mr. Pradeep Negi (Lecturer-Economics)
Govt. Inter College BHEL Hardwar
Uttrakhand India

प्र0 1 – राष्ट्रीय आय किसे कहते है। राष्ट्रीय आय और आर्थिक विकास में क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर

राष्ट्रीय आय का अर्थ, परिभाषा तथा विशेषताएँ–

एक अर्थव्यवस्था में, एक वर्ष में पैदा सभी अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं का मौद्रिक मूल्य है जिसकी गणना, दोहरी गणना के बिना की जाती है। यह गणना प्रचलित कीमतों पर की जाती है तथा इसमें विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन सम्मिलित की जाती है।

अन्य परिभाषा –

प्रौ0 मार्शल के अनुसार – "देश के प्राकृतिक साधनों पर श्रम और पूँजी द्वारा कार्य करने पर प्रतिवर्ष भौतिक एवं अभौतिक वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है। इन सबकी शुद्ध उत्पत्ति का योग राष्ट्रीय आय कहलाती है।"

राष्ट्रीय आय की विशेषताएँ –

1. यह पैदा की गई सभी अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं का मौद्रिक मूल्य होता है।
2. यह देश के सभी निवासियों की आय को शामिल किया जाता है।
3. आय की गणना दोहरी गणना के बिना की जाती है।
4. एक लेखा वर्ष के लिए की जाती है।
5. इसमें अप्रत्यक्ष कर शामिल नहीं होते।

राष्ट्रीय आय और आर्थिक विकास में सम्बन्ध

राष्ट्रीय आय एक अर्थव्यवस्था में आर्थिक प्रगति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देता है। राष्ट्रीय आय एवं आर्थिक विकास में धनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है। उच्च प्रति व्यक्ति आय वाला देश निम्न प्रति व्यक्ति आय वाला देश की अपेक्ष अधिक विकासित माना जाता है। राष्ट्रीय आय में वृद्दि से किसी भी देश के आर्थिक कल्याण में वृद्दि होती है। जिससे उपभोग के लिए अधिक मात्रा में वस्तुएँ व सेवाएँ उपलब्ध हो जाती है इससे अधिक आर्थिक कल्याण में वृद्दि होती है। इसके विपरित राष्ट्रीय आय में कमी से किसी भी देश के आर्थिक कल्याण में कमी होती है जिससे उपभोग के लिए कम मात्रा में वस्तुएँ व सेवाएँ उपलब्ध हो जाती है जिसका देश की अर्थव्यवस्था तथा आर्थिक विकास में प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और देश की विकास दर धीमी हो जाती है जिससे देश के उधोग, रोजगार, कीमतों, व्यापार आदि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

प्र0 2 – राष्ट्रीय आय की विभिन्न संकल्पनाओं को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर

राष्ट्रीय आय की विभिन्न संकल्पनाएँ–

1. **कुल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)** – एक अर्थव्यवस्था में, एक वर्ष में पैदा सभी अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं का मौद्रिक मूल्य है जिसकी गणना, दोहरी गणना के बिना की जाती है। यह गणना बाजारी प्रचलित कीमतों पर की जाती है।

2. **कुल धरेलू उत्पाद (GDP)** – किसी देश में एक वर्ष की अवधि में जिन वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन किया जाता है, उनके मौद्रिक मूल्य को ही धरेलू उत्पाद कहते है। इस मूल्य में से विदेशियों द्वारा अर्जित आय को धटा दिया जाता हैं और विदेशों से प्राप्त आय को जोड़ दिया जाता है।

सूत्र – कुल धरेलू उत्पाद (GDP) = कुल राष्ट्रीय उत्पाद – (निर्यात – आयात मूल्य)

3. **शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP)** – कुल राष्ट्रीय उत्पाद में से मूल्यहृस को धटा देने से शेष बचता है उसे शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद कहते है।

सूत्र – शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद = कुल राष्ट्रीय उत्पाद – मूल्यहृस

राष्ट्रीय आय की विभिन्न संकल्पनाएँ–

4. शुद्ध धरेलू उत्पाद (NDP) – किसी देश में एक वर्ष की अवधि में देश के अपने ही साधनों द्वारा उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं के कुल मौद्रिक मूल्य में से यदि धिसावट व्यय अथवा मूलयह्रास व्यय धटा दिया तो जो शेष बचता है, उसे शुद्ध धरेलू उत्पाद कहते है।

सूत्र – शुद्ध धरेलू उत्पाद (NDP) = कुल धरेलू उत्पाद – धिसावट व्यय

5. साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय आय (NNIFC) – बाजार मूल्यों पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में से परोक्ष कर धटाने व आर्थिक सहायता जोड़ने से जो राशि आती है, वह साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद कहलाती है। इसे ही देश की राष्ट्रीय आय कहा जाता है।

सूत्र – राष्ट्रीय आय = शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद – परोक्ष कर + आर्थिक सहायता

राष्ट्रीय आय की विभिन्न संकल्पनाएँ–

6. वैयक्तिक आय (Personal Income) –एक वर्ष की अवधि में एक देश के सभी व्यक्ति या परिवार जितनी आय वास्तव में प्राप्त करते है, उन सभी आयों के योग को वैयक्तिक आय कहते है। इसके अर्न्तगत हम मजदूरी, वेतन, ब्याज, लगान तथा लाभांश आदि को सम्मिलित करते है।

राष्ट्रीय आय में से वैयक्ति आय निकालने के लिए।

सूत्र – वैयक्तिक आय = राष्ट्रीय आय – (सामाजिक सुरक्षा कटौती + संयुक्त पूॅजी वाली कम्पनिया के लाभ – हस्तान्तरित भुगतान।

7 उपभोग आय (Disposable Income) – व्यक्ति तथा परिवारों के पास जो वैयक्तिक आय होती है, वह सब उपभोग कार्यो पर व्यय नहीं की जाती, आय का एक भाग वैयक्तिक करों के रूप में सरकार को भुगतान करना होता है और जो भाग शेष बचा रहता है, उपभोग के काम आता है।

सूत्र – उपभोग्य आय = वैयक्तिक आय – वैयक्तिक कर

परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि उपभोग्य आय पूरी तरह से उपभोग पर व्यय कर दी जाए। जो व्यक्ति अपनी आय का कुछ भाग बचा लेते है उसे बचत कहते है।

सूत्र – उपभोग्य आय = उपभोग्य + बचत

प्र03 – राष्ट्रीय आय की गणन विधियाँ लिखिए ।

उत्तर

राष्ट्रीय आय की गणन विधियाँ

- उत्पादन प्रणाली
- आय प्रणाली
- मिश्रित प्रणाली
- व्यय प्रणाली

राष्ट्रीय आय की गणन विधियॉं

1. **उत्पादन प्रणाली** – इस प्रणाली में देश के समस्त उद्योगों, कृषि तथा अन्य प्रकार के व्यवसायों की कुल उपज का मूल्य चालू कीमतों पर निकाला जाता है और इससे चल व अचल प्रतिस्थापन धटाकर जो शुद्ध उत्पत्ति बचती है, वही उस वर्ष की राष्ट्रीय आय होती है। इसका प्रयोग वहॉं किया जाता है जहॉं पर ऑंकड़े उपलब्ध होतो है।

राष्ट्रीय आय की गणन विधियाँ

2. **आय प्रणाली** – इस प्रणाली के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय का अनुमान देश के विभिन्न वयक्तियों के दो वर्गो की आय जोड़कर किया जाता है। इसमें सर्वप्रथम आय को पॉच वर्गो में विभाजित किया जाता है।

1. कर्चचारियों का वेतन
2. गैर–कम्पनी व्यापारों की आय
3. व्यक्तियों की किराए की आय
4. कम्पनियों के लाभ
5. ब्याज से आय

उपरोक्त सभी आय को जोड़कर राष्ट्रीय आय ज्ञात कर ली जाती है।

राष्ट्रीय आय की गणन विधियॉं

3. **मिश्रित प्रणाली** – इस प्रणाली के अन्तर्गत उत्पादन रीति व आय रीति दोनों का ही प्रयोग किया जाता हैं । जिन उद्योगों व्यवसायों में उत्पादन से सम्बन्धित ऑकड़े उपलब्ध होते है उनकी उपज का मूल्य को ज्ञात करने के लिए उत्पादन प्रणाली का प्रयोग किया जाता है तथा जिन व्यवसायों में ये ऑकड़ें उपलब्ध नहीं होते, उनमें आय ज्ञात करने के लिए आय प्रणाली का प्रयोग किया जाता है।

राष्ट्रीय आय की गणन विधियाँ

4. **व्यय प्रणाली** – इस प्रणाली के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय को ज्ञात करने के लिए वर्ष भर में वस्तुओं व सेवाओं पर किए जाने वाले कुल व्यय को जोड़ा को जोड़ा जाता है। व्यय दो मदों पर किया जाता है।

1. उपभोग वस्तु पर व्यय
2. निवेश वस्तुओं पर व्यय।

प्र0 4 – राष्ट्रीय आय की परिभाषा दीजिए। इसके मापने में किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है ?

उत्तर

राष्ट्रीय आय की परिभाषा

राष्ट्रीय आय का अर्थ तथा परिभाषा

एक अर्थव्यवस्था में, एक वर्ष में पैदा सभी अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं का मौद्रिक मूल्य है जिसकी गणना, दोहरी गणना के बिना की जाती है। यह गणना प्रचलित कीमतों पर की जाती है तथा इसमें विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन सम्मिलित की जाती है।

अन्य परिभाषा –

प्रौ0 मार्शल के अनुसार – "देश के प्राकृतिक साधनों पर श्रम और पूँजी द्वारा कार्य करने पर प्रतिवर्ष भौतिक एवं अभौतिक वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है। इन सबकी शुद्ध उत्पत्ति का योग राष्ट्रीय आय कहलाती है।"

भारत की राष्ट्रीय आय गणना में होने वाली कठिनाइयाँ–

1. पर्याप्त एवं विश्वसनीय ऑकड़ों का अभाव।
2. व्यावसायिक विशिष्टीकरण का अभाव।
3. उत्पादन के कुछ भाग की गणना करना कठिन होना।
4. कुछ वस्तुओं तथा सेवाओं का राष्ट्रीय आय के अर्न्तगत निर्धारण का अभाव।
5. देश में औद्योगिक श्रमता का पूर्ण उपयोग न होना।
6. सरकार द्वारा लगाये गये कर तथा व्यय के कारण राष्ट्रीय आय की गणना में कठिनाई उत्पन्न होना।
7. देश में प्राकृतिक तथा मानवी संसाधनों का समुचित उपयोग न होना।
8. सामाजिक व आर्थिक पिछड़ापन तथा शिक्षा तथा जगरूकता का अभाव।
9. दोहरी गणना की समस्या।
10. अमौद्रिक क्षेत्र का प्रभाव।

प्र0 5 – राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय में क्या अन्तर होता है ?

उत्तर

राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय में अन्तर

राष्ट्रीय आय

एक अर्थव्यवस्था में, एक वर्ष में पैदा सभी अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं का मौद्रिक मूल्य है जिसकी गणना, दोहरी गणना के बिना की जाती है। राष्ट्रीय आय अर्थव्यवस्था में उत्पादित विभिन्न वस्तुओं एवं सेवाओं की मात्रा का योग होती है।

अन्य परिभाषा –

प्रो0 मार्शल के अनुसार – "देश के प्राकृतिक साधनों पर श्रम और पूँजी द्वारा कार्य करने पर प्रतिवर्ष भौतिक एवं अभौतिक वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है। इन सबकी शुद्ध उत्पत्ति का योग राष्ट्रीय आय कहलाती है।"

राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय में अन्तर

प्रति व्यक्ति आय – प्रति व्यक्ति आय अर्थव्यवस्था की औसत आय के बारे में बताती है। अर्थव्यवस्था की कुल आय से कुल जनसंख्या को भाग देकर प्रति व्यक्ति आय को ज्ञात किया जाता है।

सूत्र – $$\text{प्रति व्यक्ति आय} = \frac{\text{कुल राष्ट्रीय आय}}{\text{कुल जनसख्या}}$$

प्र0 6 – राष्ट्रीय आय की गणना का क्या महत्तव है ?

राष्ट्रीय आय का महत्त्व

1. राष्ट्रीय आय किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के बारे सही जानकारी देता है। इससे उद्योगों, कृषि, सेवाओं आदि की जानकारी प्राप्त होती है।
2. राष्ट्रीय आय की सहायता से दो या दो से अधिक देशों की अर्थवयवस्था, प्रतिव्यक्ति आय, राष्ट्रीय आय आदि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. राष्ट्रीय आय के आँकड़े किसी देश की आर्थिक प्रगति के सूचक होते है। इनके द्वारा उत्पादन तथा अन्य क्षेत्रों में हुई प्रगति का अनुमान लगाया जा सकता है।
4. राष्ट्रीय आय से हम किसी देश के निवासियों के रहन–सहन के स्तर के बारे में जानकारी प्राप्त होता है।
5. राष्ट्रीय आय के अनुमान के अधार पर किसी भी देश की सरकार भावी योजनाओं का निर्माण करती है।
6. सरकार की आर्थिक नीति देश की राष्ट्रीय आय पर निर्भर करती है।
7. राष्ट्रीय आय के आँकड़ों के आधार पर ही बजट का निर्माण किया जाता है।
8. राष्ट्रीय आय से देश के आर्थिक विकास की भावी प्रवृत्ति का अनुमान लगाया जा सकता है। इसके साथ–साथ रोजगार व आय के स्तर के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

प्र0 7 – सकल धरेलू उत्पाद और सकल राष्ट्रीय उत्पाद में क्या अन्तर होता है ?

उत्तर

सकल धरेलू उत्पाद और सकल राष्ट्रीय उत्पाद में अन्तर

सकल घरेलू उत्पाद (GDP)	सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)
1. GDP देश के घरेलू क्षेत्र में उत्पादित सभी अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को बताता है।	1. GNP देश में सामान्य निवासियों द्वारा उत्पादित अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं का बाज़ारी मूल्य होता है।
2. GDP एक क्षेत्रीय घरेलू धारणा है जो देश के घरेलू क्षेत्र तक सीमित होती है।	2. GNP एक राष्ट्रीय धारणा है जिसका सम्बन्ध देश के सामान्य निवासियों के साथ होता है।
3. GDP = GNP – शुद्ध विदेशी साधन आय अर्थात् इस धारणा में शुद्ध विदेशी साधन आय शामिल नहीं होती।	3. GNP = GDP + शुद्ध विदेशी साधन आय अर्थात्
4. GDP एक संकुचित धारणा है जो केवल घरेलू क्षेत्र तक सीमित होती है।	4. इस धारणा में शुद्ध विदेशी साधन आय शामिल होती है।

प्र0 8 – राष्ट्रीय आय और वैयक्तिक आय में क्या अन्तर होता है ?

उत्तर

राष्ट्रीय आय और वैयक्तिक आय में अन्तर

राष्ट्रीय आय (National Income)	वैयक्तिक आय (Personal Income)
1. इसका सम्बन्ध सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्र की आय के प्रजनन से है।	1. यह एक प्राप्ति (Receipts) की धारणा है। इसमें सार्वजनिक क्षेत्र की आय शामिल नहीं होती।
2. इसमें हस्तांतरण आय शामिल नहीं होती।	2. इसमें परिवारों और व्यक्तियों की हस्तांतरण आय शामिल होती है।
3. इसमें राष्ट्रीय ऋणों पर ब्याज शामिल नहीं होता।	3. इसमें राष्ट्रीय ऋणों पर ब्याज शामिल होता है।
4. इसमें निगम कर तथा निगम बचतें शामिल होती हैं।	4. इसमें ये दोनों भुगतान शामिल नहीं होते।

प्र0 9 – निजी आय और वैयक्तिक आय में क्या अन्तर होता है ?

उत्तर

निजी आय और वैयक्तिक आय में अन्तर

निजी आय (Private Income)	वैयक्तिक आय (Personal Income)
1. वैयक्तिक आय की तुलना में निजी आय एक विस्तृत अवधारणा है।	1. वैयक्तिक आय एक संकुचित अवधारणा है।
2. यह निजी उद्यमों व परिवारों की सभी स्रोतों से आय का योग होती है।	2. यह व्यक्तियों अथवा परिवारों को प्राप्त होने वाली आय है।
3. इसमें निगम कर, अवितरित लाभ आदि सम्मिलित रहते हैं।	3. इसमें निगम कर व अतिरिक्त लाभ शामिल नहीं होते।
4. निजी आय = राष्ट्रीय आय – सार्वजनिक क्षेत्रक को घरेलू उत्पाद से प्राप्त आय + समस्त चालू हस्तांतरण।	4. वैयक्तिक आय = निजी आय – निगम कर – अवितरित लाभ (विदेशी कम्पनियों की शुद्ध प्रतिधारित आय को घटाकर)

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्र01. राष्ट्रीय आय किसे कहते है ?

उ0 प्रौ0 मार्शल के अनुसार – "देश के प्राकृतिक साधनों पर श्रम और पूँजी द्वारा कार्य करने पर प्रतिवर्ष भौतिक एवं अभौतिक वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है। इन सबकी शुद्ध उत्पत्ति का योग राष्ट्रीय आय कहलाती है।"

प्र02. प्रति व्यक्ति आय किसे कहते है ?

उ0 कल आय को कुल जनसंख्या से भाग देने से जो आय प्राप्त होती है उसे प्रति व्यक्ति आय कहते है।

प्र03. हस्तान्तरण आय किसे कहते है ?

उ0 यह एकपक्षीय भुगतान है। यह बिना किसी वस्तु या सेवा क बदले प्राप्त होती है।

प्र04. वैयक्तिक आय क्या है ?

उ0 एक वर्ष की अवधि में एक देश के सभी व्यक्ति या परिवार जितनी आय वास्तव में प्राप्त करते है उन सभी आय के योग को वैयक्तिक आय कहते है।

प्र05. राष्ट्रीय प्रयोज्य आय क्या है ?

उ0 राष्ट्रीय प्रयोज्य आय राष्ट्रीय आय, अप्रत्यख कर तथा शेष विश्व से प्राप्त शुद्ध आय का योग होता है।

Joined me

Mr. Pradeep Negi
Lecturer – Economics
School – Govt. Inter College BHEL
Sector 1, Hardwar Uttrakhand.
Mob – 9720893445
Email – pradeepnegi70@rediffmail.com
pradeepnegieconomics@gmail.com

Blog – http://pradeepnegieconomics.blogspot.com (learning activity for students)
Web – http://learningadvanceeconomics.weebly.com (Learning activity for students)
Web - http://exploring-e-economic.weebly.com (Learning e-economics in Hindi)
Web – http://pradeepnegi.weebly.com (My Profile)
Web - http://pradeepnegieconomics.wikispaces.com (Students Project Activity)
Web - http://modelgicbhelhardwar.weebly.com (Creating School Web site)

***** **End** *****